
दिनांक 02-02-1975 की अव्यक्त
वाणी पर आधारित मुरली कविता

पवित्रता-प्रत्यक्षता की पूर्वगामिनी
है और पर्सनेलिटी की जननी

बच्चों का श्रेष्ठ भाग्य देखकर बाप बहुत हर्षाया
ऊंचे बाप से भी ऊंचा भाग्य तुम बच्चों ने पाया

ऐसे बच्चों में बाप को दो विशेषताएं नजर आईं
रूहानी राँयल्टी और रूहानी पर्सनेलिटी है पाई

तुम बच्चों के चरणों में राजाएं भी शीश झुकाते
ईश्वरीय प्रसाद की जिज्ञासा लेकर सम्मुख आते

उनके लिए मास्टर ज्ञानदाता वरदाता बन जाओ
प्यूरिटी की राँयल्टी अर्थात् पर्सनेलिटी बनाओ

हृद की वस्तु और व्यक्ति का आकर्षण मिटाओ
ज्ञान गुण की सम्पन्नता का नशा मन में चढ़ाओ

किसी के अवगुण कमजोरी पर नजर ना डालो
शूद्रों के संस्कार मन में लेने से खुद को बचा लो

अपने हर बोल ईश्वरीय महावाक्य जैसे बनाओ
ये वाक्य सुनने वालों को स्वर्गाधिकारी बनाओ

अपने हर बोल की कीमत रत्न के तुल्य बनाओ
शांति शीतलता की अनुभूति औरों को कराओ

मस्तक पर शुद्ध आत्मा का सितारा चमकाओ
भाई भाई की शुद्ध वृत्ति का वायब्रेशन फैलाओ

अव्यक्त स्थिति की लाइट में अपना पार्ट बजाना
साकारी के बजाए सूक्ष्म वतनवासी नजर आना

डबल लाइट फरिश्ता बनकर औरों को दिखाना
जीरो बाप के संग खुद को आकर्षणमूर्त बनाना

श्रेष्ठ मंजिल का साक्षात्कार सबको तुम कराना
तीनों लोकों के दर्शन तुम अपने नैनों से कराना

युक्तियुक्त बोल से सबकी झोली रत्नों से भरना
गुण शक्तियों और वरदानों की पुष्प वर्षा करना
